आचार्यकुलम् Acharyakulam

शिक्षा संस्कारः अभ्युदयः निश्रेयसः

Prospectus 2024-25

संस्थापक व संरक्षक || Founders & Patrons

परम पूज्य स्वामी रामदेव Param Pujya Swami Ramdev

श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण Shraddheya Acharya Balkrishna

आशीर्वचन II BLESSINGS

॥ सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा ॥

India has been the leading country in the world in knowledge, wisdom, literature, music, art, and culture from the very beginning.

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ – मनु0 2/20

Philosopher travellers from across the world visited India from time to time to gain knowledge of its religion, philosophy, literature, medicine, astronomy, astrology and mathematics from its sacred texts. Up to the 18th century, India had been an ideal country in the world in educational, economic, social, and spiritual fields. In the 18th century, our contribution to the world market was 33% and our income was 27% of the total income of the world. The literacy rate in the country was 97%. According to the famous German scholar Max Muller, English scholar G.W. Leitner and the then British Government, the number of primary and secondary Gurukuls was 7 lac 32 thousand. The centres of higher education were 14 thousand where at least 18 subjects ranging from Mathematics, Astronomy, Astrophysics, Physics, Chemistry, Geology, Metallurgy, Philosophy, Surgery and Medical Science, Technology and Management were taught. The British rulers, having the hidden agenda to keep us enslaved for centuries, tried to ruin our rich and prestigious tradition of wisdom by destroying our whole educational system.

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा ॥

भारत सृष्टि के आदिकाल से ही ज्ञान–विज्ञान, संगीत, कला व संस्कृति के क्षेत्रों में विश्व में अग्रणी रहा है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ – मनु0 2/20

विश्व के सभी देश भारत में आकर ज्ञान–विज्ञान की दीक्षा लिया करते थे तथा भारत को अपने आध्यात्मिक गुरु व मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते थे। अठारहवीं शताब्दी तक भारत शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व के आदर्श देशों की श्रेणी में रहा है। अठारहवीं शताब्दी में विश्व बाजार में हमारी 33 प्रतिशत सहभागिता थी तथा विश्व की कुल आय में हमारी सहभागिता 27 प्रतिशत थी। देश में साक्षरता की दर 97 प्रतिशत थी। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर, अंग्रेज विद्वान जी. डब्ल्यू. लाइटनेर एवं तात्कालिक ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों के अनुसार प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के लगभग 7 लाख 32 हजार गुरुकुल थे। इसके साथ–साथ 14 हजार से अधिक उच्च शिक्षा के केन्द्र थे, जिनमें गणित, नक्षत्र विज्ञान, नक्षत्र भौतिकी, भौतिकी, रसायन, भूगर्भ विज्ञान, धातु विज्ञान, दर्शन शास्त्र, शल्य चिकित्सा व चिकित्सा विज्ञान से लेकर विज्ञान, तकनीकी व प्रबन्धन आदि से संबंधित कम से कम 18 विषय पढ़ाये जाते थे। अंग्रेजों ने भारत को सदियों तक गुलाम बनाने के षड्यंत्र के तहत हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर हमारी समृद्ध व गौरवशाली ज्ञानपरम्परा को खण्डित करने का घृणित प्रयास किया।

आशीर्वचन II BLESSINGS

Today, there are many institutes of science, management, and technology that exist in the our country but we are not able to inculcate our tradition and culture amongst the students. We want to make our culture, *sanskaras*, history, *yoga*, meditation, and good values a part of today's education system. We want to Indianise it. By awakening the hidden great self and by developing the holistic personality of the student, we want to groom him/her to become the most successful, greatest, fully awakened, fully able, industrious, and ideal human being of the world.

Through the University of Patanjali and Acharyakulam, we want to set an example by developing such a tradition of *Vaidic Rishi Sanskriti* and *Gurukuliya parampara* that after *Deekshant*, graduates of our institute will not be roaming here and there in search of a job at the mercy of others; rather they themselves will provide health, self-dependence and employment by creating job opportunities for others.

We want to build up such a foundation of *sanskaras* in the children of Acharyakulam that, be it the University of Patanjali or any other institute in the world, wherever they go they will not be influenced by the sensual materialism of the West. Rather we want to prepare such fully awakened and conscious scholars who will be able to change the course of flow of the current times.

Swami Ramdev

देश में हमारे पास विज्ञान, प्रबंधन व तकनीकी की शिक्षा देने वाले अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान हैं, परन्तु फिर भी हम अपने शिक्षा संस्थानों में अपने संस्कारों व संस्कृति को पूरी तरह समाविष्ट नहीं कर पा रहे हैं। हम आचार्यकुलम् व पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से उन्नत शिक्षा के साथ–साथ वेद–वेदांग, भारतीय संस्कृति, संस्कार, इतिहास, योग, ध्यान, संयम व सदाचार को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं। हम शिक्षा का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करना चाहते हैं। हम बच्चों में छुपे महामानव को जागृत कर शिक्षा व संस्कारों से उसका पूर्ण विकास कर, उसे दुनिया का सफलतम, श्रेष्ठ, पूर्ण जागृत, पूर्ण समर्थ, पुरुषार्थी इंसान बनाना चाहते हैं।

हमारे संस्थान के स्नातक गुरु–आश्रम से जाकर किसी अन्य की दया के पात्र या आश्रित होकर रोजगार की तलाश में न भटकें, अपितु वे स्वयं रोजगार सृजन करके अन्यों को स्वास्थ्य, स्वावलम्बन व रोजगार दें, ऐसी श्रेष्ठ वैदिक ऋषि संस्कृति की गुरुकुलीय परम्परा की प्रतिष्ठापना का एक उच्च आदर्श हम पतंजलि विश्वविद्यालय व आचार्यकुलम् के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते हैं।

आचार्यकुलम् के विद्यार्थी चाहे हमारे पतंजलि विश्वविद्यालय में या दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय में जायें, हम उनको संस्कारों का ऐसा आधार देना चाहते हैं, जिससे वे पश्चिमी दुनिया के भौतिक वासनात्मक प्रभाव से प्रभावित न हो, अपितु युग के प्रवाह को बदलने में समर्थ हो सकें। ऐसे पूर्ण सक्षम एवं पूर्ण जागृत विवेकशील विद्यार्थी हम आचार्यकुलम् में तैयार करना चाहते हैं।

स्वामी रामदेव

"भगवान् महान कार्य करने के लिए तुम्हारा चयन करना चाहते हैं।
तुम उस विराट को अपने भीतर समग्रता से उतरने तो दो।" – "स्वामी रामदेव"

आशीर्वचन II BLESSINGS

Children are the future of any nation and are at the centre of the dreams and aspirations of the parents. Parents wish to see their children achieve great heights. They aspire to give their children the best of education and the best of values. 'Acharyakulam' is the confluence of ancient *Vaidic* learning and the best of modern education. We wish to groom up leaders with high moral values along with the best of modern education through Acharyakulam.

In the earlier times, the leaders of our nation used to be nurtured in the *Gurukulas,* where pupils used to study the *Veda-Vedangas* along with the art of defence, economics and virtues and thereby gained the ability of critical thinking of what was right and what was wrong. Hence honest, austere and self-disciplined people held the supreme place amongst individuals, family, society and the nation. Unfortunately, today's leaders of our country are being groomed in Convent Schools and foreign institutions like Oxford, Cambridge, Harvard. We have to prepare social, cultural, spiritual, economic, industrial, political, scientific and intellectual leadership through Acharyakulam and other erudite programmes. Unfortunately, in today's experts, leaders and intelligentsia feelings and values of spirituality, *Bhartiyata* (Indianness) and selfe steem are withering on the vine. We will groom up such leadership tinged with spirituality, *Bharatiyata,* and self esteem who will have the amalgamation of modernization and *Bharatiyata.*

Acharyakulam shall play a pivotal role in nurturing superior and fully awakened citizens.

I heartily wish all the Children, Parents, and Guardians a successful, prosperous and pious life ahead.

Acharya Balkrishna

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं तथा माता–पिता की आशाओं और सपनों के केन्द्र होते हैं। हर एक माता–पिता अपने बच्चों को दुनिया में सबसे ऊँचाई पर देखना चाहते हैं। माता–पिता बच्चों को दुनिया की सबसे श्रेष्ठ शिक्षा देने के साथ–साथ उनको श्रेष्ठतम संस्कार भी देना चाहते हैं। भारत की सनातन आर्ष शिक्षा परम्परा में शिक्षा एवं संस्कारों का श्रेष्ठतम दिव्य समन्वय था। उसी सनातन आर्ष ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का संगम है 'आचार्यकुलम्'। आचार्यकुलम् में हम एक ओर जहाँ आधुनिकतम शिक्षा देंगे, वहीं दूसरी ओर संस्कारों के द्वारा उनमें श्रेष्ठतम नेतृत्व भी पैदा करेंगे।

पहले भारत का नेतृत्व गुरुकुलों में तैयार होता था, जहाँ पर विद्यार्थी वेद–वेदांगों के साथ–साथ शस्त्रविद्या, नीतिशास्त्र व अर्थशास्त्रों का भी अध्ययन करके सही व गलत की विवेचना करने की क्षमता प्राप्त कर लेते थे। तब व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र में ईमानदार, संयमी, सदाचारी व्यक्तियों का सर्वोपरि स्थान होता था। दुर्भाग्य से आज देश का नेतृत्व कॉन्वेंट स्कूलों एवं ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज, हार्वर्ड आदि विदेशी शिक्षा संस्थानों में तैयार हो रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, व्यवसायिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक व बौद्धिक नेतृत्व हमें आचार्यकुलम् एवं अन्य ज्ञानानुष्ठानों से तैयार करना है। दुर्भाग्य से आज विशेषज्ञों, नेतृत्वकर्त्ताओं व बुद्धिजीवियों में आध्यात्मिकता, भारतीयता व स्वाभिमान का भाव व संस्कार अत्यन्त क्षीण या मृतप्राय हो गया है। हम सभी क्षेत्रों में भारतीयता, आध्यात्मिकता व स्वाभिमान युक्त नेतृत्व तैयार करेंगे जिसमें आधुनिकता व भारतीयता का समग्र समावेश होगा।

आचार्यकुलम् देश के लिए श्रेष्ठतम, पूर्ण जागृत नागरिक तैयार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

सभी विद्यार्थियों व अभिभावकों को मंगलमय जीवन की अनन्त शुभकामनायें !

आचार्य बालकृष्ण

Principal's Message

Acharyakulam is a distinguished educational institution located in Ranchi, Jharkhand, following the CBSE putters to impart knowledge to young minds, while also fostering Vedic education. Our school serves as a platform for students to embark on a journey of self-discovery and intellectual growth, guided by a devoted team of educators committed to unlocking the potential of each child.

We take great pride in establishing a secure, inclusive, and supportive learning environment, where every student is encouraged to excel academically, emotionally, and socially, Our curriculum is thoughtfully designed to promote critical thinking, faster innovation, and cultivate a passion for learning. We offer a wide array of opportunities, both within and Beyond the classroom, allowing our students to explore their interests and cultivate their passions.

At the heart of our educational philosophy lies character development. We aim to instill in our students the values of integrity, respect, and responsibility, as they form the bedrock of a strong and harmonious society. Through our comprehensive extracurricular programs, community outreach initiatives, and emphasis on leadership skills, we inspire our students to become compassionate global citizens who actively contribute to the welfare of others. Together, let us work towards these goals always keeping our School Motto in mind: "Believe in Yourself."

As the famous quote goes, "Educating a mind without educating a heart is no education at all." At Acharyakulam, we firmly believe in nurturing both the mind and heart of our students to create well-rounded individuals capable of making a positive impact on the world.

Sujata Kaura

प्राचार्या का संदेश

झारखंड के राँची में स्थित एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है– आचार्यकुलम्। जिसमें वैदिक तथा आधुनिक शिक्षा के साथ सी.बी. एस.ई. पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य कराया जाता है। विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ स्वयं की खोज और जीवन निर्माण के लिए समर्थ और समावेशी वातावरण प्रदान किया जाता है।

विद्यालय के पाठ्यक्रम में बच्चों को शीघ्र सीखने की कला और उत्साह पूर्वक अध्ययन करने की शैली को प्रधानता दी जाती है। विद्यार्थियों को विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से अवसर प्रदान किए जाते हैं जिससे उनके भीतर प्रतिभाओं का विकास होता है और अपनी रूचि अनुसार अध्ययन करने का और आगे बढ़ने का अवसर मिलता है।

शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। विद्यार्थियों में ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा अनुशासन के साथ जीवन मूल्यों को स्थापित किया जाता है। शिक्षण विधियों, सामाजिक सेवा और नेतृत्व विकास के द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने है ताकि वे एक समर्थ, शिक्षित, सेवाभावी नागरिक बनकर देश सेवा करें और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दें। ''स्वयं को पहचानो'' इस आदर्श वाक्य को ध्यान में रखते हुए अपने सामर्थ्य को जगाकर अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निरंतर अग्रसर रहे ऐसा हम अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं।

''शिक्षित मस्तिष्क द्वारा शिक्षित मन का निर्माण होता है'' इस भाव के अनुसार ही हम आचार्यकुलम् के विद्यार्थियों के मन मस्तिष्क को स्वस्थ बनाते हैं जिससे विद्यार्थी एक समर्थ मानव बने और संसार को सात्विक ऊर्जा प्रदान हेतु सामर्थ्यशाली बने।

सुजाता कौरा

Introduction

With the divine blessings and guidance of Param Pujya Yogishi Swami Ramdevji and Acharya Balkrishnaji, an innovative vision in the field of value-based education-Acharyakulam Haridwar was inaugurated on 26th of April, 2013. Acharyakulam, educational institute, is the divine confluence of the age-old tradition of imparting wisdom and knowledge in the ancient Gurukulams by our ancestral Rishis&Munies and the ultra-modern Scientific, Professional, and IT-enabled education system of today.

With the vision of reaching the common masses and creating awareness about Vaidic and modern education, a leap was taken and in the capital city of Jharkhand, Ranchi, Acharyakulam was inaugurated in April 2019. In the first year of its inception, the school started with more than 600 students and each year has seen exponential growth and added classes from LKG to 9 .In the last four years, we have seen people of this region taking a keen interest for Vaidic and modern education. And now LKG to 9th 1900 students are in our school.

परिचय

परम् पूज्य योग ऋषि स्वामी रामदेव जी और आचार्य बालकृष्ण जी के दिव्य आशीर्वाद और मार्गदर्शन के साथ, मूल्यों पर आधारित शिक्षा के क्षेत्र में एक नवाचारी दृष्टिकोण – आचार्यकुलम् हरिद्वार का उद्घाटन 26 अप्रैल, 2013 को किया गया था। आचार्यकुलम, एक शैक्षणिक संस्थान, आज के प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक और आईटी–सक्षम शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ प्राचीन गुरुकुलीय में ज्ञान और शिक्षा का परंपरागत दिव्य संगम है।

सामान्य जनता तक पहुँचने और वैदिक और आधुनिक शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य के साथ प्रण लिया गया और झारखंड की राजधानी राँची में आचार्यकुलम् का उद्घाटन अप्रैल 2019 में किया गया। इसके प्रारंभिक वर्ष में, स्कूल ने एलकेजी से 5 तक कक्षाओं को शामिल करके 600 से अधिक विद्यार्थियों के साथ शुरुआत की। पिछले चार वर्षों में, हमने इस क्षेत्र के लोगों की वैदिक और आधुनिक शिक्षा में रुचि देखी है। इसी का परिणाम है कि वर्तमान में विद्यालय में एलकेजी से 9 कक्षा तक 1900 विद्यार्थियों की उपस्थिति है।

Our Mission हमारा लक्ष्य

To groom fully awakened and fully competent souls who will build an awakened, enlightened, and developed family, who in turn will enhance the physical, mental, intellectual, spiritual, social, economic, political, and scientific society that will enrich the nation and then the world.

OBJECTIVES OF ACHARYAKULAM :-

1. To groom up Vaidic scholars to prepare proven scholars in Grammar, Philosophy. Upanishad, Veda, Vaidic literature, Vaidic Mathematics, Indian proven history, and Raj Dharma, etc., and to prepare graduates with the power to give socially, spiritually, economically, scientifically and politically ideal leadership.
2. To prepare leaders of modern Bharata- to prepare intellectuals and national leaders who can set new landmarks in different fields like Technology, Management, Defence, Administrative Services, Police Services, Medicine, Engineering, Games and Sports, Fine Arts, Music, Drama, Agriculture, Industry, Research, etc.

We will be instilling in the young minds the glory, utility, and attraction of both the expectations. Then a child will get prepared according to his/her Karmashaya, Sanskar and Swabhava. Param Pujya Swamiji believes that the possibility of a reformation in a child decreases by one percent with every passing year of age. And generally from every aspect, a child becomes enlightened by one percent every year. But with the help of intellectual efforts, we can develop this enlightenment physically, intellectually, and spiritually by one to ten percent.

पूर्ण जागृत व पूर्ण समर्थ आत्माएँ तैयार करना और इनके द्वारा फिर पूर्ण जागृत प्रकाशित, विकसित तथा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व वैज्ञानिक रूप से समर्थ परिवार, समाज,राष्ट्र व विश्व का निर्माण करना।

आचार्यकुलम् की उपादेयताः

1. वैदिक विद्वान् निर्माण योजना – योग, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, वेद, वैदिक साहित्य, वैदिक गणित, भारतीय सिद्धान्त, इतिहास और राजधर्म आदि विषयों में सिद्ध विद्वानों का निर्माण करना और मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और राजनैतिक रूप से एक आदर्श नेतृत्व देने की क्षमता रखने वाले स्नातक विद्यार्थी तैयार करना।

2. आधुनिक भारत का नेतृत्व – आधुनिक भारत के निर्माण के लिए सेवा के विभिन्न क्षेत्रों जैसे प्रौद्योगिकी, प्रबन्धन, रक्षा सेवा, प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, खेलकूद, कला, संगीत, नाट्य, कृषि, शिल्प व शोध से लेकर उद्योग आदि विविध क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित करने हेतु बौद्धिक व राष्ट्रीय नेतृत्व तैयार हो। दोनों अपेक्षाओं की महिमा, उपयोगिता एवं आकर्षण हम बच्चों में सम्प्रेषित करेगें। फिर जैसे जिसके कर्माशय, संस्कार एवं स्वभाव होंगे वैसे वे तैयार होंगे। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज का मानना है कि बच्चों में आयु के अनुसार प्रतिवर्ष एक–एक प्रतिशत सुधार की सम्भावना क्षीण होती जाती है

तथा सामान्य रूप से हर दृष्टि से एक प्रतिशत जागृति होती है। ज्ञान युक्त पुरुषार्थ से इस जागृति को हम एक (1) प्रतिशत से दस (10) प्रतिशत शारीरिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से विकसित कर सकते हैं।

Our Vision हमारी दृष्टि

Expected behaviour of the members of Acharyakulam family:

1. Knowledge Aspect – To enhance the intellectual development of a child is our primary goal.

2. Behavioural Aspect - To ensure that a child remains 100% free from prominent behavioural vices. And being aware of the latent vices, he/she endeavors with full determination and honesty to get rid of the same so that we can take pride in saying, "We at Acharykulam are following the path of our ancestors." All Acharyas and scholars are expected to have the attitude and values as expected from ideal angels, children of Rishi-Rishikas, Veer-Veeranganas, and the greatest children of Bharatmata. We should have strong morale against unethical conduct. We should have the same hatred against the latent vices like desire, despair, insistence, impulse, reaction, etc., as we have against prominent vices like non-vegetarian diet, malpractices, depravity, violence, addiction, etc. We should not welcome any unethical conduct, though it is true that, our Sanskaras and Karmashaya instilled in our soul from previous lives and our attitude and nature of the present life will stand as the biggest challenges in front of us. However, with awakened conscience, firm determination and enthusiasm, and with the practice of yoga, devotion, and such other methods we can overcome such difficulties and make our evil sanskaras ineffective.

Expected Behaviourfrom the Parents/Guardians

Parents/Guardians must be 100% free from conspicuous vices. They are supposed to be the followers of our ancient and Vedic religion of Rishi-Rishikas, Veer-Veeranganas and great personalities. Furthermore, they must be loyal to their duties and responsibilities and have great reverence, dedication and devotion to our great motherland and own Vedic & spiritual culture, religion and tradition. They must learn the skill to use appreciation punishment as tools for the bright upliftment of their children. Ultimately, it is urged to show utmost dedication, devotion and loyalty towards institution.

आचार्यकुलम् परिवार के सदस्यों से अपेक्षित आचरण:

1. ज्ञान पक्ष – बाल्यकाल से ही बच्चों का बौध्दिक विकास हमारा मूल लक्ष्य है।

2. आचरण पक्ष – स्थूल दोषों से विद्यार्थी 100 प्रतिशत मुक्त रहें तथा सूक्ष्म दोषों को अनुभव करके पूरी ईमानदारी से उनको दूर करने के लिए संकल्पित रहें जिससे कि हम गर्व से कह सकें कि हमारे पूर्वज कैसे थे? आचार्यकुलम् के विद्यार्थी व स्नातकों जैसे थे। एक आदर्श ईश्वर पुत्र, ऋषि–ऋषिकाओं व वीर–वीरांगनाओं की सन्तान तथा भारत माता या धरती माता की श्रेष्ठ सन्तानों को जैसा आचरण रखना चाहिए वैसा ही आचरण हमारे आचार्यो, विद्यार्थियों व स्नातकों का हो। अशुभ आचरण के प्रति प्रतिपक्ष भावना अत्यन्त सबल होनी चाहिए। जैसी हमारी माँसाहार, दुराचार, हिंसा व दुर्व्यसनों के प्रति होती है, वैसी ही भावना जीवन के सूक्ष्म दोषों – वासना, निराशा, आवेग, आग्रह एवं प्रतिक्रिया आदि के प्रति निर्मित हो। अशुभ का हम स्वागत न करें। यह सत्य है कि अनादि काल से हमारे साथ जुड़ा कर्माशय, संस्कार, इस जन्म का स्वभाव व प्रवृति दोष हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती या बाधा बनकर बीच में आयेगा। लेकिन दृढ़ संकल्प व उत्साह के साथ विवके पूर्वक योग, साधना व तपः पूत वातावरण में गुरुजनों के पावन सान्निध्य, आशीर्वाद, आज्ञानुवर्तन, प्रियाचरण एवं प्रभुकृपा से हम इस समस्या पर भी विजय पाकर निश्चय ही अपने समस्त अशुभ संस्कारों को दग्धबीज या निर्बीज करेंगे। इस पवित्र संकल्प को हमें अपने जीवन में प्रतिपल क्रियान्वित करना है।

अभिभावकों से अपेक्षित आचरण:

अभिभावक स्थूल दोषों से 100 प्रतिशत मुक्त होने चाहिए। ऋषि–ऋषिकाओं, वीर–वीरांगनाओं एवं महापुरुषों के पथानुगामी हों। स्वधर्म (वेदधर्म, मातृधर्म, पितृधर्म, राष्ट्रधर्म) के प्रति पूर्ण निष्ठावान् होने चाहिए। बालक–बालिकाओं के प्रति पूर्ण स्नेह के साथ–साथ उनके उत्कर्ष हेतु अभिभावकों में उदारता एवं कठोरता होनी चाहिए। संस्थान के प्रति पूर्ण समर्पित, ईमानदार एवं निष्ठावान् हों।

Salient Features मुख्य विशेषताएँ

1. As a trailblazer of a different education system, Acharyakulam integrates the eternal and sacred heritage of oral Vaidic learning along with the latest developments in modern education in a world-class learning ambience, facilitated with the best hi-tech multimedia learning tools.
2. As a part of the traditional Acharykulam system, the children master subjects ranging from Sanskrit, Veda-Vedangas, Upanishad, Vaidic Mathematics, Philosophy, etc. Similarly part of Modern education they also develop proficiency in the English language, English conversation, Mathematics, Science, Social Studies, Art & Craft, Sports, etc. However, inculcating Vaidic Culture, Ethics and Sanskaras lie at the centre of the whole concept.
3. Multi-faceted and Comprehensive development of the individual's personality is the objective of Education. A truly holistic development-i.e. the development of physical, intellectual, spiritual and emotional faculties of a child is the goal here at Acharykulam and regular practice of yoga and hawan by the whole of its family plays a significant role to achieve this goal.
4. Acharyakulam is a confluence of the best of the Eastern and the Western systems of Education.
5. With special emphasis on spirituality and character building, Acharyakulam has been established as the breeding ground for social and National leaders of tomorrow.
6. To inculcate the indomitable love for the Motherland and the Mother Nature, the young children here will be taught the Swadeshi way of life based on Yoga and Ayurveda with satvik and nutritious food.
7. The institution always encourages innovative and creative programs.

1. नवीन शिक्षा व्यवस्था के अन्वेषक के रूप में आचार्यकुलम् में प्राचीन वैदिक परंपरा के साथ–साथ अत्याधुनिक विधाओं व उपकरणों से सुसज्जित परिसर में आधुनिक पाठ्यक्रम का समन्वय किया गया है।
2. परम्परागत वैदिक गुरुकुलीय पद्धति के अनुरूप छात्र एक ओर जहाँ संस्कृत, वेद–वेदांग, उपनिषद्, दर्शन इत्यादि में दक्षता प्राप्त करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे आधुनिक शिक्षा पद्धति के अनुरूप अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी सम्भाषण, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला एवं शिल्प व खेलों में भी निपुण होते हैं। छात्रों में वैदिक सभ्यता, संस्कार एवं मानवीय मूल्यों को अंतर्निविष्ट करना ही "आचार्याकुलम्'' की अवधारणा का केन्द्र बिन्दु है।
3. बहुआयामी व समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से छात्रों का सर्वांगीण विकास ही आचार्यकुलम् का लक्ष्य है तथा आचार्यकुलम् परिवार द्वारा प्रतिदिन किये जाने वाले योग व प्रातःकालीन हवन की इस उद्देश्य की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
4. आचार्यकुलम् पूर्व और पश्चिम की श्रेष्ठतम शैक्षणिक पद्धतियों का अद्वितीय संगम उदाहरण है।
5. आध्यात्मिकता तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए आचार्यकुलम् को कल के भावी सामाजिक व राष्ट्रीय नेतृत्व निर्माण की दिव्य निर्माणशाला के रूप में स्थापित किया गया है।
6. भारत माता तथा प्रकृति के प्रति आदर व प्रेम अंतर्निविष्ट करने के लिए छात्रों को योग, आयुर्वेद पर आधारित स्वदेशी जीवन पद्धति एवं पूर्ण सात्विक व पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जाता है।
7. संस्थान में सदैव अभिनव तथा रचनात्मक क्रियाकलापों को प्रोत्साहन दिया जाता है।

ACADEMIC FACILITIES

Natural Environment with Lush Green Campus

The Acharyakulam, under the spiritual and divine guidanceof Param Pujya Yogrishii Swami Ramdevji and Param Shraddhey Acharya Balkrishnaji, is established in a green and spacious campus that transmits the children to a totally different environment from the hustle and bustle of the city to a calm, spiritual and serene ambience. The campus has a stretch of green space all around the school building creating an apt environment for the students to concentrate and focus in their academics.

Besides the infrastructures are regularly upgraded to meet the upcoming requirements of the school.

The school has lush green campus with varieties of decorative plants and medicinal herbs. The orchidsmeadows with variety of flowers are a visual treat and the fresh air of the campus with scenic beauty provides tranquility and peace. For small kids there is mini zoo containing ducks, fishes etc. The 'greenness' of a school finds expression in various aspects of environment. There is a cow shed with number of cows as it is considered sacred and students are taught about its piousness and cultural importance.

Administrative Block

The nodal point of our campus, the Acharyakulam Administrative Block is designed to reflect the lively and Vedic transparent character of the school. It accommodates key staff offices and departments, a reception desk, a conference centre, a visitor's lounge as well as an outlet for complete school campus.

शैक्षणिक सुविधाएं

प्राकृतिक वातावरण और हरियाली से आच्छादित परिसर

परम् पूज्य योग–ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज और आयुर्वेद शिरोमणि श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज के मार्गदर्शन में, शैक्षणिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक वातावरण के साथ वैदिक शिक्षा और संस्थान आधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं से परिपूर्ण है– आचार्यकुलम्।

आचार्यकुलम् विद्यालय में बच्चों को प्रकृति के निकट रखने हेतु हरा–भरा परिसर निर्मित किया गया है। इसमें विभिन्न प्रकार के फलों के पौधे, औषधीय पौधे और सदैव परिसर को हरा–भरा सुंदर बनाए रखने वाले स्थाई पौधों को लगाया गया हैं। मौसम के अनुसार फूल देने वाले और परिसर को सुंदर बनाने वाले छोटे–छोटे विभिन्न प्रकार के दर्शनीय पौधों को लगाया जाता है। जिससे विद्यार्थी अधिकतम पौधों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।

प्रशासनिक भवन

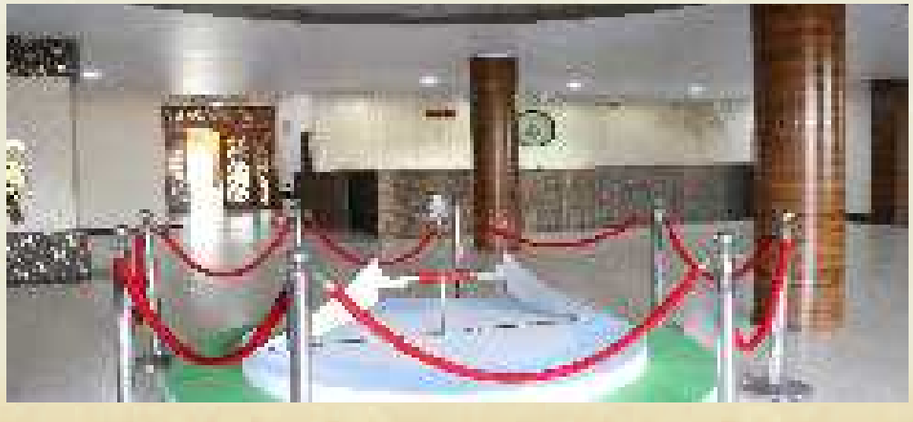

वैदिक और आधुनिक समस्त सुविधायुक्त विद्यालय परिसर का प्रशासनिक भवन दोनों शैक्षिणिक भवन (बालक और बालिका) के मध्य निर्मित किया गया है। जिसमें भूतल पर अभिभावक तथा नवागन्तुकों के लिए स्वागत कक्ष तथा शिक्षक–अभिभावकों के लिए सभा कक्ष, प्राचार्या कक्ष आदि को व्यवस्थित तरीके से बनाया गया है। इसके उपरी भाग में बच्चों के अध्यापन व शिक्षण हेतु लाइब्रेरी, कम्प्यूटर–लैब, भौतिकी, रासायनिकी, जैविक लैब, संगीत, चित्रकला, नृत्य, खेल कक्ष आदि स्थापित किए गए है। जिनके माध्यम से बच्चों को अधिकतम कलाओं में निपुण किया जा सकें।

Assembly Area

The school has two big assembly areas where the students start their day with yagya, hawana and yoga to refresh and energise themselves for the day in a spiritual note. One is a Green court in the ground floor and other a hall on the fourth-floor. Both the space is even the epicentre of various school cultural activities.

Game Facility

There are few things as joyful as to behold children at play. Also, a child's body needs to be exercised as much as the mind. Thus, Acharyakulam can boast of its sports facilities which includes 3 huge playgrounds which are fit to host all national tournaments. A special sports room for Indoor games has been especially designed to play table tennis, carom, chess, martial arts etc.

Playground

The school has three huge playgrounds with ample space. A separate area is dedicated to equipments to enhance the motor skills of pre primary students like slides, swings, climbers, spring riders, spinners and seesaw for children. Outdoor games like cricket, football, volleyball, hockey, etc. Can be played in this vast playground.

Art and Craft Atelier

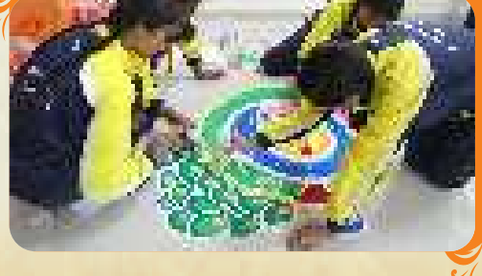

Aakaar - translates to Form and Anant-meaning amanifestation of all possibilities which are 'Infinite' inexperience is the venue for learning which is expressive and intuitive. The school has Art and Craft room where the young hands are trained and nurtured with utmost care by the qualified faculty. All forms of art like 2-diimensional, 3-Dimensional art, madhubani painting , silhouette painting , etc are taught keeping in mind the interest of the students.

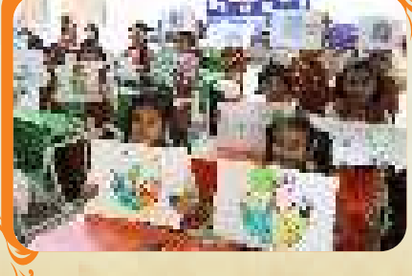

बहुद्देशीय भवन

विद्यालय परिसर में ही एक बहुद्देशीय भवन भी बनाया गया है। जिसमें विद्यार्थियों को प्रातःकालीन प्रार्थना, यज्ञ, योग के साथ दिन भर विभिन्न प्रकार के क्रिया–कलाप, खेल आदि की प्रशिक्षण कक्षाएं लगाई जाती है। विभिन्न पर्व, त्यौहार, राष्ट्रीय दिवस व विभिन्न प्रतियोगिताएँ समय–समय पर इस भवन में कराई जाती है। जिससे बच्चों में सामूहिक कार्य करने की और परस्पर सहयोग की भावना का विकास हो सके।

खेल सुविधाएँ

विद्यालय परिसर में वर्गानुसार विभिन्न प्रकार खेल सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है। आयु व वर्गानुसार विद्यार्थियों को अलग–अलग प्रकार के शारीरिक व बौद्धिक खेल सिखाए जाते है। जिनसे बच्चों का शारीरिक व बौद्धिक विकास होता है। प्रशासनिक भवन में बच्चों की सुविधानुसार, टेबिल टेनिस, कैरमबोर्ड, शतरंज व विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, जिनसे बच्चे अध्ययन के साथ सात्विक मनोरंजन करते है।

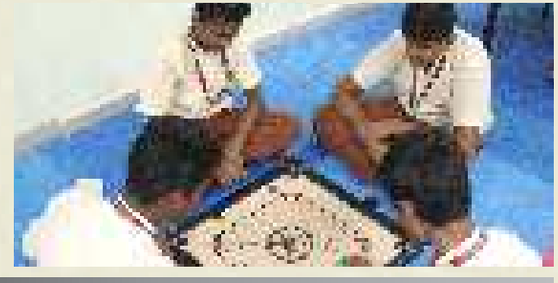

खेल मैदान

विद्यालय परिसर में बालक–बालिकाओं के शारीरिक विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के खेल की व्यवस्था की गई है। आयु–वर्ग के अनुसार बालक–बालिकाओं को पृथक–पृथक खेल सिखाए जाते है। जिसमें बास्केटबॉल, फुटबॉल, बैडमिटन, बालीबाल, कबड्डी, कुश्ती, वुशू, लॉनबाल, खो–खो आदि भारतीय पारंपरिक खेलों के साथ आधुनिक खेल भी सम्मिलित किए गए है। खेल के माध्यम से विद्यार्थियों ने विद्यालय का नाम राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है।

कला और चित्रकला कक्ष

विद्यार्थियों के मनोभावों का विकास और कार्य शैली के विकास के उद्देश्य से कला व चित्रकला की विशेष शिक्षा प्रदान की जाती है। किसी की कला के द्वारा हम स्वयं व समाज का कल्याण कैसे कर सकते है इसका बोध कला और चित्रकला के माध्यम से कराया जाता है। कला और चित्रकला में भी बच्चे राष्ट्रीय स्तर के पुरूस्कार प्राप्त कर उत्साहित होते है और नित्य नवीन सृजन कर अपनी मन की अभिभावनाओं को व्यक्त करते है।

Yog योग

Yoga is the fundamental element of Patanjali Yogpeeth, the institute through which the well-being of the entire human race can be achieved. Its tangible proof is the manifestation of the divine vision of revered Gurudev, which resulted in the establishment of Acharyakulam. Yoga plays a vital role in our lives, which is why special emphasis is given to yoga in Acharyakulam School. Yoga classes are conducted daily in the school. From the early classes, students are provided with yoga education. Regular practice of yoga keeps the body and mind healthy as it is through a healthy body and mind that children's intellectual development takes place. Therefore, yoga education is given special importance in Acharyakulam.Yoga is not only taught for the promotion of health, but also in a competitive manner. As a result, students who excel in the field of yoga receive national awards, bringing pride to the institution and their parents.

पतंजलि योगपीठ संस्थान का प्राणभूत तत्व है योग–योग के माध्यम से कैसे सम्पूर्ण मनुष्य जाति का कल्याण हो सकता है। इसका साक्षात्–प्रमाण है परम पूज्य गुरुदेव जिनकी संकल्पना का परिणाम है आचार्यकुलम्। योग हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसलिए आचार्यकुलम् विद्यालय में योग पर विशेष बल दिया जाता है। विद्यालय में प्रतिदिन योग की कक्षाएं संचालित की जाती है। प्रारंभिक कक्षा से ही योग की शिक्षा प्रदान की जाती है। नियमित योग करने से शरीर व मन स्वस्थ रहते है, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से ही बच्चों का बौद्धिक विकास होता है इसलिए आचार्यकुलम् में योग शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। योग को स्वास्थय के साथ प्रतियोगितात्मक रूप से भी सिखाया जाता है इसलिए विद्यार्थी योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय पुरूस्कार प्राप्त कर संस्था व माता–पिता को गौरवान्वित करते है।

Yagya यज्ञ

Keeping in with the VEDIC tradition students participate in Yagya and Havan done every morning to enable them to be deeply rooted to their culture. It is a ritual worship making offerings to the devas through the sacred fire (Agni). The students recite mantras and follow the procedure of havan.

हमारी सनातन वैदिक पद्धति है यज्ञ, हमारा संपूर्ण जीवन ही यज्ञमय है। इस सृष्टि का आधार है यज्ञ। यज्ञ एक दैनिक क्रिया नहीं अपितु संपूर्ण जीवन शैली है यज्ञ के माध्यम से कैसे प्रकृति की सेवा की जाती है। इसका अभ्यास यज्ञ के माध्यम से किया जाता है। यज्ञ के माध्यम से बच्चों के सात्विक मानसिक विकास की प्रक्रिया को समझाया जाता है। इसलिए प्रतिदिन और विशेष अवसरों, त्यौहारों पर विशेष यज्ञ अनुष्ठान कराया जाता है।

Vedic Centre वैदिक शिक्षा

Last but not the least to mention is our Vedic room where the students get the opportunity to be close to our Vedic culture with a special team of our Sanskrit teachers who are trained in Haridwar to teach our students " The Gita Shlokas" with the proper pronunciation and diction.

वैदिक शिक्षा व संस्कारों का केन्द्र है– आचार्यकुलम्। जिसमें वेद, उपनिषद्, गीता, दर्शन के साथ ही योग व आयुर्वेद के वैदिक ग्रथों का अध्ययन तथा स्मरण कराया जाता है। मनुष्य जीवन का आधार है वैदिक शिक्षा। वैदिक शिक्षा, वैदिक मंत्र के द्वारा विद्यार्थियों की दिनचर्या का प्रारंभ किया जाता है तथा प्रारंभिक कक्षा से अंतिम कक्षा तथा नियमित संस्कृत भाषा और संस्कृत की पुस्तकों का अध्यापन कराया जाता है। वैदिक शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी विद्यालय, समाज में स्वंय को गौरवान्वित अनुभव करते है तथा समस्त अभिभावकों द्वारा वैदिक शिक्षा से मिलने वाले संस्कार को प्रोत्साहित किया जाता है। वैदिक शिक्षा को केन्द्र में रखकर ही आधुनिक शिक्षा प्रदान की जाती है।

Library

The digital age cannot lessen the importance of school libraries. In the context of schools, libraries play a significant role in providing information to students in the academic field. The books stored on the shelves of libraries are the source of wisdom and knowledge. The school has well equipped library for both Senior and Primary wing. The books on various topics, story books, novels, motivational books, poems, cartoon books etc. are arranged sequentially thereby catering the needs of individuals.

पुस्तकालय

विद्यालय में बच्चों के ज्ञानवर्धन हेतु एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय की व्यवस्था कराई गई है जिसमें सभी कक्षाओं के विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त विभिन्न विषयों की पुस्तकों का अध्ययन करते है। पुस्तकालय में पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ ही विभिन्न भाषा और विषयों की पुस्तकों का संकलन किया गया है, वेद, उपनिषद, दर्शन, रामायण, गीता, महाभारत आदि वैदिक ग्रंथ और संस्कृत साहित्य के साथ ही भाषा, विज्ञान तकनीकी ज्ञान, कम्प्यूटर, गणित तथा हिन्दी साहित्य, कला, संगीत आदि विभिन्न विषयों की पुस्तकों का संकलन किया गया है।

Dance Studio नृत्य

A big spacious room is alloted for promoting the art of dance among the students, headed by a very well experienced dance guru who excels in both classical and western dance form.

आचार्यकुलम् में बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ विभिन्न प्रकार की कलाओं में पारंगत किया जाता है। इसमें नृत्य कला भी प्रमुख है प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा भारतीय और आधुनिक सभी प्रकार की नृत्य कला का प्रशिक्षण सभी विद्यार्थियों को कराया जाता है। नृत्य के माध्यम से बच्चों की रूचि अनुसार विशेष प्रशिक्षण तथा विभिन्न अवसरों, राष्ट्रीय दिवस और विभिन्न राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है।

Music संगीत

A separate space has been dedicated to music which is the heart and soul of our Indian culture. Vocal and Instrumental both the art is promoted by our highly learned, experienced and talented music teachers.

भारतीय संस्कृति में संगीत को मनुष्य जीवन में विशेष स्थान दिया गया है। वेद में सामगान, जटापाठ, मालापाठ, शिखापाठ, रेखापाठ, ध्वजपाठ, दण्ड–पाठ, रथपाठ, घनपाठ आदि विधियों के द्वारा वेद के मंत्रों का गायन किया जाता है। वेद पाठ के माध्यम से ही दक्षिण के विद्वानों द्वारा वेद में मिलावट होने से बचाया गया है। इसी परंपरा को निरंतर रखते हुए, वैदिक और शास्त्रीय संगीत के सभी छंद, स्वर, लय को विद्यार्थियों को एक कला के रूप में सिखाया जाता है। संगीत के प्रशिक्षित व कुशल अध्यापकों द्वारा बच्चों को संगीत शिक्षा प्रदान की जाती है।

Health and Care Unit

Medical camps are organized, and check-ups done for oral, dental, Ophthalmology and general health of children on an ongoing basis. The school has 2 sick rooms separately for boys and girls with all medical facilities. A qualified and trained nurse is available 24x7 to attend an kind of casualties or emergencies.

स्वास्थ्य व चिकित्सा इकाई

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क कार्य करता है। इस युक्ति को चरितार्थ करने के लिए विद्यार्थियों की आकश्मिक चिकित्सा हेतु विद्यालय बालक–बालिकाओं के लिए पृथक–पृथक चिकित्सा कक्ष बनाए गए हैं। विद्यालय में समय–समय पर बच्चों व अध्यापकों तथा सेवा कर्मियों के स्वास्थय परीक्षण हेतु शिविर लगाए जाते है। जिसमें सामान्य रूप से मुंह, दांत, ब्लड प्रेशर, आदि सामान्य जाँच की जाती है तथा स्वास्थय संबंधी शिक्षा भी विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जाती है।

Transport Facility

The Acharyakulam operates a fleet of buses that ply on pre-determined routes throughout Ranchi. Our buses are regularly inspected by Quality Controllers and each bus carries a staff member with an on- board Phone, and every bus have been equipped with GPS tracking system for the ease of parents.

यातायात सुविधा

''साध्य की प्राप्ति हेतु साधन अत्यंत महत्वपूर्ण है।'' आचार्यकुलम् विद्यालय में राँची शहर के तथा आसपास के लगभग 30 किमी तक के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते है इसलिए उनके आवागमन हेतु संस्था द्वारा सर्वसुविधायुक्त बसों को उपलब्ध कराया जाता है। जिससे अभिभावकगण निश्चिंत होकर सुविधापूर्वक अपने बालक–बालिकाओं को शिक्षार्थ विद्यालय भेजते है। बसों की संपूर्ण शहर में सुविधाजनक तथा आवागमन में कम समय व्यतीत हो इस तरह से बच्चों का आवागमन मार्ग निर्धारित किया जाता है। प्रत्येक बस में चालक–परिचालक के साथ अध्यापकगण को भी बच्चों की सुरक्षा और सुविधा तथा अनुशासन बनाए रखने हेतु भेजा जाता है।

Computer Lab

Technology plays a vital role in modern education, which is fulfilled by our fully equipped computer-lab with 50 computers, having access to wi-fi enabling a class to sit comfortably and practice lab assignments with 1: 1 ratio under the guidance of our qualified faculty.

कम्प्यूटर लैब

आचार्यकुलम् में वैदिक के साथ आधुनिक शिक्षा का भी अध्ययन कराया जाता है और आधुनिक शिक्षा कम्प्यूटर के बिना अधूरी रह जाती है इसलिए विद्यालय में आधुनिकतम सुविधाओं के साथ नवीनतम कम्प्यूटर सिस्टम की व्यवस्था की गई है। इंटरनेट के साथ स्मार्टक्लास में विद्यार्थियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण कराया जाता है। कम्प्यूटर लैब को अलग–अलग भाषा के प्रशिक्षण हेतु भी प्रयोग में लाया जाता है।

Kids Activity Room

The school has two activity rooms for small kids to enable them to enhance in all co- curricular activities like Poem recitation, debate, speech, declamation, essay writing painting, sketching, calligraphy, poster making, collage making, mock parliament etc.

बाल क्रियाकलाप कक्ष

बाल्यावस्था से ही व्यक्तित्व का विकास होता है। बाल्यावस्था में बच्चों को जिस प्रकार के संस्कार और शिक्षा दी जाती है उसी प्रकार का जीवन जीने लगते है। आचार्यकुलम् विद्यालय में प्रारंभिक कक्षा से विद्यार्थियों में वैदिक संस्कार के साथ–साथ संस्कृत शिक्षा और अन्य सभी विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। बाल्यावस्था में बच्चों का बौद्धिक और शारीरिक विकास क्रियाकलाप के माध्यम से होता है। अतः उनके लिए अलग–अलग क्रियाकलाप कक्ष स्थापित किए गए और खेल के लिए पृथक–पृथक झूले, फिसलनी आदि खिलौने और व्यायाम हेतु विभिन्न प्रकार के खिलौने तथा सामग्री लगाई गयी है। प्रत्येक क्रियाकलाप कक्ष में अलग–अलग शिक्षण सामग्री भी उपलब्ध कराई गई है।

शिक्षक संकाय Teacher's Section

आचार्यकुलम् में, हम मानते हैं कि सच्ची शिक्षा पाठपुस्तकों और शैक्षिक दृष्टिकोण से परे होती है। हमारे शिक्षक सक्रिय रूप से संबद्ध होते हैं और समर्थनशील समुदाय को बढ़ावा देने में लगे रहते हैं, जहाँ विविधता का सम्मान किया जाता है और हर आवाज को सुना जाता है। उनके अथक प्रयासों से, वे एक वातावरण बनाते हैं जो छात्रों और कर्मचारियों दोनों के बीच खुले संवाद, सहयोगी समझदारी और मायनेदार संबंधों को प्रोत्साहित करता है।

हमारा समावेशी शिक्षा के प्रति नवाचारी और साधुवादी दृष्टिकोण, हमें एक बच्चे की समस्याओं में गहराई से प्रवेश करने में मदद करता है, समस्याओं की जड़ें खोजता है और युवा बच्चों को बेहतर और जिम्मेदार नागरिक के रूप में पालन करता है। इस प्रकार, शिक्षकों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाने के लिए, टीचर ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें अधिक अनुभवी स्रोत व्यक्तियों को लेना सम्मिलित होता है जो अधिगम असमर्थता/अक्षमता, और व्यवहार गुणों से संबंधित हैं। शिक्षकों के लिए विभिन्न परस्पर संवादात्मक सत्रों का आयोजन करने के लिए भी संसाधन व्यक्तियों को किराए पर लिया जाता है। इस तरीके से शिक्षकों को नवीनतम विकसित शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जो छात्रों के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को और आकर्षक और समझने योग्य बनाने में मदद करते हैं।

In Acharyakulam, we believe that true education goes beyond textbooks and academic perspectives. Our teachers actively engage and strive to promote a supportive community, where diversity is respected, and every voice is heard. Their tireless efforts create an environment that encourages open dialogue, cooperative understanding, and meaningful relationships between students and staff.Our inclusive and progressive approach to education helps us delve deep into a child's problems, identify the roots of issues, and nurture young minds to become better and responsible citizens. To enhance the skills and knowledge of teachers, teacher orientation programs are organized, which involve experienced individuals who specialize in learning disabilities, behavioral traits, and pedagogy. Resources are also hired to facilitate various interactive sessions for teachers to foster dialogue among themselves. This ensures that teachers are trained in adopting the latest teaching methodologies, which make the process of education and learning more engaging and comprehensible for students.

Admission Documents प्रवेश दस्तावेज

1. List of documents to be attached with the Admission Form
2. Birth Certificate sued by Municipal Corporation of the State Government. Only following Proof of Residence (in the name of the child's father or Mother) accepted as Address proof of the Child (No other address proof will be accepted)-Unique Identification Card (Aadhar Card)/Voter ID Card/Post-paid Mobile Bat/Electricity Bill/Passport/Gas connection/Ration Card (having mother and father name along with name of child).
3. If the sibling(s) are studying in the same school, photo copy of the ID card issued by the school office for the Academic Session 20...../20..... Only real brother/sister studying in the school will be considered as sibling
4. Medical fitness certificate and blood group report certified by medical practitioner of theStudent is mandatory.
5. In case of applicants with Special Needs, a copy of certificate of Disability from a Medical Officer of Govt. Hospital should be submitted along with the registration form.
6. Appropriate documentation in case of Single Parent (presently running divorce case in the court will not be considered, either widow/widower or divorced would be considered). Appropriate documentation in case of change in the name of mother/ father after marriage, divorce, adoption etc.
7. ID proof of both Father, Mother, Guardian and Emergency contact person is mandatory.
8. Transfer Certificate and Report Card of the previous school for admission in Class I and above.
9. Certificate indicating the category (SC/ST/OBC/others) to be submitted.
10. Two passport size photographs of the child and one photograph of each parents (Father, Mother and Guardian).

प्रवेश पत्र के साथ संलग्न किए जाने वाले दस्तावेजों की सूची

1. राज्य सरकार के लोगों और जन्म प्रमाण पत्र संख्या को वहन करने वाले नगर निगम द्वारा जारी किया गया जन्म प्रमाण पत्र। जन्म प्रमाण पत्र के लिए एक शपथ पत्र या अस्पताल प्रमाण पत्र या आधार कार्ड को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

2. निवास का प्रमाण (बच्चे के पिता या माता के नाम पर) बच्चे के पते के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है (कोई अन्य पता प्रमाण स्वीकार नहीं किया जाएगा) विशिष्ट पहचान पत्र (आधार कार्ड) /मतदाता पहचान पत्र/पोस्ट पेड मोबाइल बिल/बिजली बिल/पासपोर्ट/गैस कनेक्शन/राशन कार्ड।

3. यदि कोई भाई/बहन स्कूल में पढ़ते हैं, शैक्षणिक सत्र 20 ..../.... .... के लिए स्कूल कार्यालय द्वारा जारी आईडी कार्ड की फोटोकॉपी। स्कूल में पढ़ने वाले केवल वास्तविक भाई/बहन को भाई/बहन के रूप में माना जाएगा।

4. विशेष आवश्यकताओं वाले आवेदकों के मामले में, सरकारी अस्पताल के एक चिकित्सा अधिकारी से विकलांगता के प्रमाण पत्र की एक प्रति को पंजीकरण फॉर्म के साथ जमा किया जाना चाहिए।

5. एकल माता–पिता के मामले में उपयुक्त दस्तावेज (वर्तमान में अदालत में चल रहे तलाक के मामले पर विचार नहीं किया जाएगा, या तो विधवा/विधुर या तलाकशुदा माना जाएगा)। विवाह, तलाक, गोद लेने आदि के बाद माता/पिता के नाम में परिवर्तन के मामले में उपयुक्त दस्तावेज।

6. पिता और माता या अभिभावक दोनों का आईडी प्रूफ।

7. कक्षा 1 और उससे ऊपर की कक्षाओं में प्रवेश के लिए पिछले स्कूल और कक्षा का प्रमाण पत्र और रिपोर्ट कार्ड।

8. प्रमाण पत्र श्रेणी (एससी/ओबीसी/अन्य) को प्रस्तुत करने के लिए।

9. बच्चे के दो पासपोर्ट आकार के फोटो और माता–पिता (पिता और माता या अभिभावक) की एक–एक तस्वीर।

Admission Rules प्रवेश हेतु नियम

1. Admission in Acharyakulam is based on merit and is subject to the availability of seats.
2. Since the philosophy of the school lies in Vaidic Education, the interest and inclination of the students and their parents are important for us.
3. Parents/Guardians interested to get their child enrolled at the school must collect the application form from the school reception before the end of the registration period.
4. Incomplete or illegible registration/admission forms and the forms without photographs, will not be processed/accepted. 5. The application form for registration/admission should be signed by the parents or guardians only.
5. Special attention must be paid while entering the name and date of birth of the child in the form, as subsequent changes will not be permitted.
6. The school reserves the right to admit a child to a class suited to his/ her level. Admission will be finalized strictly on a merit basis after screening/interview/interaction/written test as per the decision of the management and payment of the prescribed fee.
7. Dates for tests/interviews/interaction will be published at theSchool notice board/website. The school management reserve the
8. Right to change the date and time of the interview.
9. Mere issue of registration forms or appearing to test does not imply an admission of a child.
10. A written test will be conducted for classes I and above for English, Hindi, Maths, and General Knowledge to judge the eligibility of the child.
11. Once admission is taken the fees will not be refunded, even if the child is withdrawn from the school.

1. आचार्यकुलम् में प्रवेश योग्यता पर आधारित है और सीटों की उपलब्धता के अधीन है।
2. चूंकि स्कूल का दर्शन वैदिक शिक्षा में निहित है, इसलिए छात्रों और उनके माता–पिता की रूचि और झुकाव हमारे लिए महत्वपूर्ण है।
3. अपने बच्चे को स्कूल में दाखिला लेने के लिए इच्छुक माता–पिता/अभिभावकों को पंजीकरण की अवधि समाप्त होने से पहले स्कूल के रिसेप्शन से आवेदन फॉर्म लेना होगा।
4. अपूर्ण या अस्पष्ट पंजीकरण/प्रवेश फॉर्म और तस्वीरों के बिना प्रपत्र, संसाधित/स्वीकार नहीं किए जाएंगे।
5. पंजीकरण/प्रवेश के लिए आवेदन पत्र केवल माता–पिता या अभिभावकों द्वारा हस्ताक्षरित होना चाहिए।
6. फॉर्म में बच्चे के नाम और जन्म तिथि दर्ज करते समय विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि बाद में परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी।
7. स्कूल अपने स्तर के अनुकूल बच्चे को कक्षा में प्रवेश करने का अधिकार रखता है। प्रबंधन के निर्णय और निर्धारित शुल्क के भुगतान के अनुसार स्क्रीनिंग/इंटरव्यू/ इंटरैक्शन/लिखित परीक्षा के बाद मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा।
8. परीक्षण/साक्षात्कार/बातचीत के लिए तिथियां स्कूल नोटिस बोर्ड/वेबसाइट पर प्रकाशित की जाएंगी। स्कूल प्रबंधन साक्षात्कार की तारीख और समय को बदलने का अधिकार सुरक्षित रखता है।
9. पंजीकरण के फॉर्म जारी करना या परीक्षण के लिए उपस्थित होना किसी बच्चे का प्रवेश सुनिश्चित नहीं करता।
10. बच्चे की योग्यता का आकलन करने के लिए अंग्रेजी, हिन्दी, गणित और सामान्य ज्ञान के लिए कक्षा 1 और उससे ऊपर की कक्षाओं के लिए लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी।
11. स्कूल में एक बार प्रवेश लेने के बाद फीस वापस नहीं की जाएगी, भले ही बच्चा वापस ले लिया गया हो।

Bank Account Detail

Please Note :
Parents are requested to deposit the requisite contribution amount in the following account only after the admission is confirmed by the school management.

ACCOUNT NAME – ACHARYAKULAM RANCHI
NAME OF THE BANK – HDFC BANK
BANK BRANCH – UPPER BAZAR, RANCHI
ACCOUNT NO – 50100350189800
IFSC CODE – HDFC0005189/HDFC000719

Nota Bene

1. "Swadeshi" is a basic and important principle of Acharyakulam and Patanjali Yogpeeth. Therefore all general utility items should be sourced from Indian Manufacturers only.
2. Mobiles, Cameras, iPods, Tabs, Walkman, and all such costly Electronic items, Perfumes, costly silver and gold ornaments, etc. are NOT permitted.
3. Dress Code: Parents are requested to take care while sending casual clothes with the children. Tight and transparent outfits are not allowed. Dress sense should be based on BharatiyaParampara, comfort, appropriateness and tastefulness of choice, rather than trends of fashion, desire for display, or attracting unnecessary attention. These dresses should NOT display risque prints or symbols, advertisements that promote drugs, alcohol, tobacco, or violence. They are prohibited on all apparels.

बैंक खाता विवरण

कृपया ध्यान दें

विद्यालय की ओर से प्रवेश पुष्टि की सूचना मिलने पर अभिभावक कृपया निम्न एकाउण्ट में निर्धारित सहयोग राशि जमा करायें :

खाता का नाम – आचार्यकुलम् राँची
बैंक का नाम – एचडीएफसी बैंक
बैंक शाखा – अपर बाज़ार, राँची
खाता संख्या – 50100350189800
IFSC कोड – HDFC0005189

ध्यातव्य

1. आचार्यकुलम् एवं पतंजलि योगपीठ का मूल एवं महत्वपूर्ण सिद्धान्त "स्वदेशी" है। इसलिए सभी उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं भारतीय निर्माताओं द्वारा निर्मित होनी चाहिए।
2. मोबाइल, कैमरा, आइपॉड, टेबलेट, वॉकमैन और इस तरह का कोई भी इलेक्ट्रॉनिक सामान, इत्र, नेल पॉलिश, लिपस्टिक, लिप–ग्लॉज, सोने एवं चाँदी के महंगे आभूषण आदि वस्तुएँ लाने की अनुमति नहीं होगी।
3. ड्रेस कोड (वेशभूषा) – अभिभावकों से प्रार्थना है कि बच्चों के वस्त्र देते समय ध्यान रखें कि वस्त्र पारदर्शी एवं चुस्त ;कसे हुएद्ध न हों। पहनावा भारतीय परम्परा आधारित, आरामदायक व शोभनीय हो न कि फैशनेबल एवं दूसरों का ध्यान आकर्षित करने वाले वस्त्र, अश्लील प्रिन्ट/सन्देश या चिन्ह वाले या नशीले पदार्थ, तम्बाकू, शराब या हिंसा को विज्ञापित करने वाले हों। इस प्रकार की सभी पोशाकें प्रतिबन्धित हैं। लड़कियों के लिए बिना बाजू की पारदर्शी एवं अन्य पोशाक पहनने की अनुमति नहीं होगी।

The Aiders

Activities

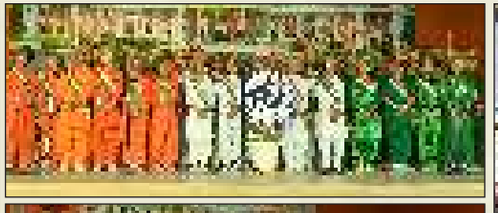
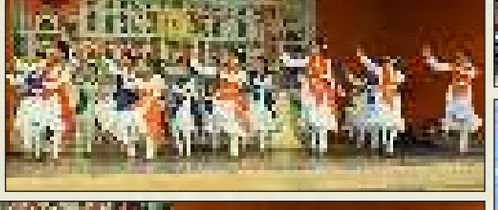

Activities

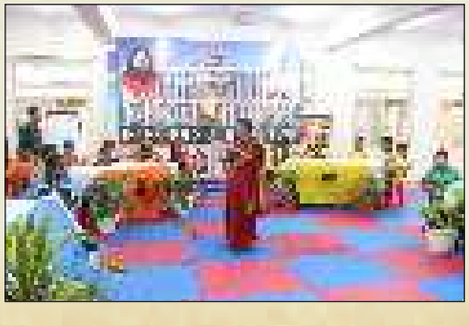

Acharyakulam In News

शिक्षा संस्कारः

आचार्यकुलम्

अभ्युदयः निश्रेयसः

जीवन सार

प्रेम, करुणा, शान्ति, वात्सल्य ही मेरा स्वरूप या स्वधर्म है। मेरा कर्म ही मेरा धर्म है।
मैं मात्र पाषाण प्रतिमाओं का पूजक नहीं अपितु जिन जीवरूपी प्रतिमाओं को मेरे परमात्मा ने
स्वयं गढ़ा है वह उनमें अर्थात् स्वयं जीवों की आत्मा में मेरा परमात्मा विराजमान है।

मैं चैतन्य, मूर्त ब्रह्म का उपासक हूँ। प्रलोभन मुझे झुका नहीं सकते, बाधाएँ मेरे जीवन पथ को अवरुद्ध नहीं कर सकती व निन्दाएँ मुझे मेरे ध्येय से विचलित नहीं कर सकती। मैं गुरु, शास्त्र व भगवान् की आज्ञा में अपना सर्वस्व अर्पित करके जीवन को धन्य बनाऊँगा; मैं अपने जीवन से पुण्य के प्रवाह को अवरुद्ध नहीं होने दूँगा। मैं प्रतिपल प्रेम, करुणा, साहस, धैर्य, शक्ति, आत्मविश्वास से भरा हुआ जीवन जीऊँगा। हर पल मेरा बाह्य एवं आंतरिक जीवन शुचितापूर्ण रहेगा। मेरी जिन्दगी में सब हितों से ऊपर ''राष्ट्रहित सर्वोपरि है'' यह सिद्धान्त आदर्श होगा। मैं पहले माँ भारती का पुत्र हूँ बाद में सन्यासी, गृहस्थ, नेता, अभिनेता, कर्मचारी, अधिकारी या व्यापारी हूँ। देश न होता तो मैं कहाँ होता? राष्ट्र मेरा सर्वस्व है। यह जीवन देश के लिए है ''इदं राष्ट्राय इदन्न मम''। इसी प्रकार यह जीवन भगवान् के लिए है, यही मेरी जिन्दगी का ध्येय है। मेरे राजधर्म या सन्यास धर्म से प्रथम मेरा राष्ट्रधर्म है। मेरे देश का सम्मान मेरा सम्मान है और मेरे देश का अपमान मेरा अपमान है। मैं अपने देश की गरिमा, गौरव व सम्मान को आहत नहीं होने दूँगा। मैं अपना सर्वस्व अर्पित करके भी भारत को विश्व की महाशक्ति बनाऊँगा। मैं देश का खोया हुआ गौरव वापस लौटाऊँगा। आइए! इस पवित्र संकल्पना को पूर्ण करने के लिए राष्ट्रधर्म व राष्ट्रजागरण के इस पुण्य–पवित्र अभियान में अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए आगे आएँ।

आइए! हम सब संगठित होकर एक नया भारत बनाएँ।

Acharyakulam

Near Police Station Namkum, Tata Road, Ranchi, Jharkhand, 834010
Contact No. :- +91-6287842460, +91-6287842467
officeacharyakulamranchi@gmail.com, enquiryacharyakulamranchi@gmail.com
acharyakulamranchi.com